**रविवार 28 दिसंबर, 2025**

## विषय — क्रिश्चियन साइंस

**स्वर्ण पाठ:** व्यवस्थाविवरण **18: 15**

---

"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना।"

---

**उत्तरदायी अध्ययन:** यशायाह **9: 2, 6, 7**
यशायाह **11: 1-5**

2 जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।
6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी,
7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा॥
1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।
2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।
3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा॥ वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा.
4 परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा।
5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥

### पाठ उपदेश

**बाइबल**

**1.** भजन संहिता **107: 15, 20**

15 लोग यहोवा की करूणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!
20 वह अपने वचन के द्वारा उन को चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

## 2. यूहन्ना 3: 16, 17, 34

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।

## 3. लूका 2: 1, 3-14, 40

1 उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं।
3 और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने अपने नगर को गए।
4 सो यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया।
5 कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।
6 उन के वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए।
7 और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा: क्योंकि उन के लिये सराय में जगह न थी।
8 और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे।
9 और प्रभु का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ; और प्रभु का तेज उन के चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए।
10 तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।
11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।
12 और इस का तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।
13 तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया।
14 कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो॥
40 और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

## 4. यूहन्ना 8: 1, 2, 12-16, 28, 31, 32

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
13 फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।

14 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूं, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां को जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं या कहां को जाता हूं।
15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।
16 और यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूं, और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
28 तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

## 5. मत्ती 8: 5-8, 13

5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

## 6. यूहन्ना 14: 6 (से यह वाणी), 15-17

6 यीशु ने उस से कहा …
15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
17 अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

## 7. यूहन्ना 15: 26

26 परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।

## 8. यूहन्ना 16: 13 (से *1st* :)

13 परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा,

## 9. इफिसियों 1: 2, 13

[2] हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥
[13] और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

**विज्ञान और स्वास्थ्य**

1. **109: 24-31**

जब एक नया आध्यात्मिक विचार धरती पर पैदा होता है, तो यशायाह की भविष्यद्वाणी का पवित्रशास्त्र अक्षय रूप से पूरा होता है: "क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ ... और उसका नाम अद्भुत।"

यीशु ने एक बार अपनी शिक्षाओं के विषय में कहा था: "कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है। यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं।" (यूहन्ना 7: 16,17.)

2. **107: 1-14**

वर्ष 1866 में, मैं ने जीवन, सत्य और प्रेम के क्रिएचरियन साइंस या ईश्वरीय नियमों की खोज की और अपनी खोज का नाम क्रिश्चियन साइंस रखा। वैज्ञानिक मानसिक उपचार के पूर्ण दिव्य सिद्धांत के इस अंतिम रहस्योद्घाटन के स्वागत के लिए भगवान ने कई वर्षों के दौरान मुझे विनम्रतापूर्वक तैयार किया।

यह अप्रत्यक्ष सिद्धांत इम्मानुएल के रहस्योद्घाटन की ओर इशारा करता है, "हमारे साथ भगवान," - संप्रभु कभी उपस्थिति, हर बीमार से पुरुषों के बच्चों को पहुंचाने "कि मांस के लिए वारिस है।" क्राइस्टियन साइंस के माध्यम से, धर्म और चिकित्सा एक दिव्य प्रकृति और सार से प्रेरित हैं; ताजा विश्वास और समझ के लिए दिया जाता है, और विचार भगवान के साथ खुद को बुद्धिमानी से परिचित कराते हैं।

3. **109: 11-24**

अपनी खोज के तीन साल बाद, मैंने माइंड-हीलिंग की इस समस्या का समाधान खोजा, शास्त्रों की खोज की और थोड़ा और पढ़ा, समाज से अलग रखा और एक सकारात्मक नियम की खोज के लिए समय और ऊर्जा समर्पित की। ... यह खोज मधुर, शांत और आशा से भरी हुई थी, स्वार्थपूर्ण या निराशाजनक नहीं थी। मैं जानता था कि सभी सामंजस्यपूर्ण माइंड-एक्शन का सिद्धांत ईश्वर है, और यह कि पवित्र, उत्थान विश्वास द्वारा आदिम ईसाई उपचार में उत्पन्न हुए थे; लेकिन मुझे इस उपचार के विज्ञान का पता होना चाहिए, और मैंने दिव्य रहस्योद्घाटन, कारण और प्रदर्शन के

4. **110: 13-24**

साइंटिफिक खुलासे की इन बातों को मानते हुए, बाइबल ही मेरी अकेली टेक्स्टबुक थी। धर्मग्रंथों पर रोशनी डाली गई; तर्क और खुलासे में तालमेल बिठाया गया, और उसके बाद क्रिश्चियन साइंस की सच्चाई सामने आई।

इस पुस्तक, विज्ञान और स्वास्थ्य में निहित विज्ञान मुझे किसी मानव कलम या जीभ ने नहीं सिखाया; और न जीभ और न कलम उसे उलट सकती है। यह पुस्तक उथली आलोचना या लापरवाह या दुर्भावनापूर्ण छात्रों द्वारा विकृत हो सकती है, और इसके विचारों का अस्थायी रूप से दुरुपयोग और गलत प्रस्तुत किया जा सकता है; लेकिन उसमें निहित विज्ञान और सत्य हमेशा परखने और प्रदर्शित करने के लिए रहेगा।

**5. 7: 27-8**

जब से लेखिका ने रोग और पाप दोनों के उपचार में सत्य की शक्ति की खोज की है, तब से उसकी प्रणाली का पूरी तरह से परीक्षण किया गया है और उसे कम नहीं पाया गया है; लेकिन ईसाई विज्ञान की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए, मनुष्य को इसके दिव्य सिद्धांत का पालन करते हुए रहना होगा। इस विज्ञान की पूर्ण शक्ति विकसित करने के लिए, भौतिक इंद्रियों की विसंगतियों को आध्यात्मिक भावना के सामंजस्य के रूप में प्रस्तुत करना होगा, जैसे कि संगीत का विज्ञान गलत स्वरों को सही करता है और ध्वनि को मधुर सामंजस्य प्रदान करता है।

**6. 483: 13-21**

लेखिका की पवित्र खोज के बाद, उन्होंने ईसाई धर्म को "साइंस" नाम दिया, भौतिक इंद्रियों को "त्रुटि" नाम दिया, और मन को "पदार्थ" नाम दिया। विज्ञान ने विश्व को इस मुद्दे पर संघर्ष करने के लिए बुलाया है और इसका प्रदर्शन, जो बीमारों को ठीक करता है, त्रुटि को नष्ट करता है, तथा सार्वभौमिक सद्भाव को प्रकट करता है। उन स्वाभाविक क्रिश्चियन वैज्ञानिकों, प्राचीन महानुभावों और मसीह यीशु के लिए, परमेश्वर ने निश्चित रूप से क्रिश्चियन विज्ञान की भावना को प्रकट किया, भले ही पूर्ण अक्षर नहीं।

**7. 123: 16-29**

क्रिश्चियन साइंस शब्द का प्रयोग लेखक द्वारा दिव्य उपचार की वैज्ञानिक प्रणाली को नामित करने के लिए किया गया था।

इस रहस्योद्घाटन में दो भाग शामिल हैं:

1. मन-चिकित्सा के इस दिव्य विज्ञान की खोज, शास्त्रों की आध्यात्मिक समझ और सांत्वनादाता की शिक्षाओं के माध्यम से, जैसा कि गुरु ने वादा किया था।

2. वर्तमान प्रदर्शन से यह सिद्ध होता है कि यीशु के तथाकथित चमत्कार विशेष रूप से किसी ऐसे युग से संबंधित नहीं थे जो अब समाप्त हो चुका है, बल्कि वे एक सदैव क्रियाशील ईश्वरीय सिद्धांत को दर्शाते हैं। इस सिद्धांत का संचालन वैज्ञानिक व्यवस्था की शाश्वतता और अस्तित्व की निरंतरता को इंगित करता है।

**8. 110: 25-31**

यीशु ने नश्वर मन और शरीर को ठीक करने के लिए क्रिश्चियन साइंस की शक्ति का प्रदर्शन किया। लेकिन इस शक्ति को नजरअंदाज कर दिया गया था, और इसे फिर से "संकेतों का पालन" के साथ, मसीह की आज्ञा के अनुसार आध्यात्मिक रूप से समझा जाना, सिखाया जाना और प्रदर्शित किया जाना चाहिए। इसके विज्ञान को उन लोगों को अवश्य समझना चाहिए जो ईसा मसीह पर विश्वास करते हैं और आध्यात्मिक रूप से सत्य को समझते हैं।

**9. 455: 20-27**

ईश्वर सर्वोच्च सेवा के लिए चयन करता है जो इस तरह की फिटनेस में बड़ा हो गया है क्योंकि यह मिशन की असंभवता के किसी भी दुरुपयोग का प्रतिपादन करता है। अखिल बुद्धिमान अयोग्य पर अपने उच्चतम विश्वासों को नहीं देता है जब वह एक संदेशवाहक का कमीशन करता है, तो यह वह है जो आध्यात्मिक रूप से खुद के पास है। कोई भी व्यक्ति इस मानसिक शक्ति का दुरुपयोग नहीं कर सकता है, अगर उसे ईश्वर की शिक्षा दी जाए।

**10. 174: 14-16**

जो कोई भी क्रिश्चियन साइंस में रास्ता खोलता है, वह एक यात्री और अजनबी है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता बनाता है।

**11. 55: 16-29**

मेरी थकी हुई आशा उस सुखद दिन को महसूस करने की कोशिश करती है, जब मनुष्य मसीह के विज्ञान को पहचान लेगा और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा, — जब वह ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उस परमात्मा की उपचार शक्ति का एहसास करेगा जो उसने किया है और मानव जाति के लिए कर रहा है। वादे पूरे होंगे। दिव्य चिकित्सा के प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, अब मसीह के प्याले को पीता है, और वह ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

संत उहन्ना के शब्दों में: "वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।" इस कम्फ़र्टर को मैं ईश्वरीय विज्ञान समझता हूँ।

**दैनिक कर्तव्यों**

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

**दैनिक प्रार्थना**

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

**उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम**

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

**कर्तव्य के प्रति सतर्कता**

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6